निश्चय बुध्धि विजयंती

ब्रह्माकुमारीझ

प्रस्तुति

ब्र. कु. प्रफुल्लचन्द्र

किस किस में निश्चय?

१. अपने आप में निश्चय

२. बाप में निश्चय

३. ड्रामा में निश्चय

अपने आप में निश्चय

- मैं पदमापदम भाग्यशाली आत्मा हूँ जो मुझे बाबा का बेहद का सत्य ज्ञान मिला है और मेरी समझ में आया है.....
- मैं अधीन नहीं अधिकारी आत्मा हूँ.....
- मैं कल्प कल्प की विजयी आत्मा हूँ,,,,, सफलता मेरा जन्मसिध्ध अधिकार है.....
- मैं विश्वनाटक की आलराउंड पार्टधारी, आधारमूर्त, उद्धारमूर्त एवं पूर्वज आत्मा हूँ.....
- मैं मास्टर सर्वशक्तिमान आत्मा हूँ.....
- मैं वरदानी, महादानी, विश्वकल्याणी आत्मा हूँ.....

बाप में निश्चय

❖बाबा ही मेरा सर्वस्व है, मेरा परमपिता है, परमशिक्षक है, और परमसतगुरु भी है.....

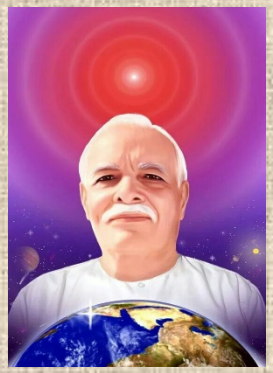

❖वो ही सर्वज्ञ है, ज्ञानसागर है, गीता ज्ञान दाता है.....

❖वो ही जगत का नियामक है, विश्व परिवर्तक है.....

❖वो ही पतित पावन, मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता, दुःख हरता सुख करता, सब का तारणहार है.....

❖वर्तमान संगमयुग पर वो ही ब्रह्मा के तन में अवतरित हो कर, मुझे अडॉप्ट कर, मुझे ज्ञान और योग की शिक्षा दे कर फरिस्ता सो देवता बना रहा है.....

ड्रामा में निश्चय

- विश्व रंगमंच पर पुरुष, प्रकृति और परमात्मा के बिच खेला जा रहा यह बना बनाया अनादी, अविनाशी विश्व नाटक है.....
- इस विश्व नाटक में हर आत्मा रूपी एक्टर को निश्चित पार्ट मिला हुआ है जो हर सृष्टिचक्र मे उसे रिपीट करना है.....
- यह विश्व नाटक इतना संतुलित और न्यायसंगत है की इस मे किसी भी आत्मा को कही पर भी अन्याय नहीं हुआ है.....
- ड्रामा के किसी भी दृश्य को देख अपसेट नहीं होना है, हर आत्मा अपना अपना पार्ट बजा रही है.....
- यह विश्व नाटक कोइ आकस्मिक या अंधाधुंध नाटक नहीं है लेकिन कई शाश्वत सिद्धांतो पर आधारित है.....

निश्चय बुध्धि विजयी रत्नों की निशानियाँ

१. निश्चय बुध्धि की निशानी विजय है, इसीलिए गायन है

' निश्चय बुध्धि विजयंती '

२. निश्चय बुध्धि बच्चे हर सरकमस्टांस में अपनी स्वस्थिति की शक्ति द्वारा सदा विजयी अनुभव करेंगे, उसकी कभी माया से हार नहीं हो सकती |

३. उसका स्वयं प्रति व दूसरों के प्रति निर्णय सहज, सत्य और स्पष्ट होगा | मन में जरा भी मुँझ नहीं होगी, सदा मौज होगी |

४. निश्चय बुध्धि अपने को किसी भी कार्य में, बाप का साथ होने के कारण, अकेला और बेसहारा अनुभव नहीं करेंगे भल मेजोरिटी एक तरफ हो जाय

Continued.....

५. निश्चय बुध्धि विजयी रत्न हार में भी और जित में भी जित का अनुभव करेंगे हर द्वन्द में समत्व का भाव रहेगा |

६. विजयी रत्न किसी कार्य से, समस्या से, व्यक्ति से किनारा नहीं करेंगे, लेकिन कर्म करते हुए, सामना करते हुए, सहयोगी बनाते हुए बेहद की वैराग वृत्ति में रहेंगे |

७. कभी अपने विजय का वर्णन नहीं करेंगे एवं दूसरो को उल्हाना नहीं देंगे |

८. निश्चय बुध्धि दूसरो की हिम्मत बढ़ाएंगे, किसी को निचा दिखने की कोशिश नहीं करेंगे |

Continued.....

९. कर्म में, वाणी में और चेहरे पर हर समय रुहनी नशा दिखाई देगा

१०. हर कर्म और संकल्प में विजय सहज प्रत्यक्ष फल के रूप में अनुभव होगा, महेनत के रूप में नहीं

११. क्वेश्चन मार्क समाप्त- हर बात में बिंदु बन बिंदु लगाने वाले होंगे

१२. निश्चय बुध्धि हर समय अपने को बेफिक्र बादशाह सहज और स्वत: अनुभव करेंगे अर्थात बार बार स्मृति लानेकी महेनत नहीं करनी पड़ेगी

Continued.....

१३ . निश्चय बुध्धि अर्थात सदा बाप पर बलिहार जानेवाले| बलिहार अर्थात सर्वांश समर्पित- सर्व अंश समर्पित

१४. निश्चय बुध्धि सदा बेफिक्र बादशाह और सदा निश्चिन्त होगा | हर बात में निश्चित विजयी होनेके नशे में रहेगा दुसरो को भी यह नशे का अनुभव होगा

१५. वह सदा स्वयं भी रूहानी नशे में रहेगा और उनके नशे को देख दुशारो को भी यह रूहानी नशे का अनुभव होगा

१६. निश्चय बुध्धि विजयी रत्न में निमित्त भाव होगा | निमित्त भाव की विशेषता के कारण निर्माण बुध्धि होगी | जीतनी निर्माण बुध्धि होगी उतना नव निर्माण करते रहेंगे | निर्मान भी रहेंगे | भाषा में मधुरता होगी और दूसरो को आगे बढ़ाने की उदारता भी होगी |

ॐ शांति

Thanks to Baba & All of You